सं शो वि | गुड़गांव | 187-87 | 39772 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं विरेन्द्रा ग्राम, गांव सिकन्दरपुर मेहरोली रोड़, गुड़गांव, के श्रीमक श्री रामनौमी, पुत श्री गराज, मार्फत श्री श्रद्धानन्द, महा सचिव, गुड़गांव फैक्ट्री वर्कं प्रयूनियन (एटक ग्राफिस), गुड़गांव तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई श्रीसोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, श्रीद्योगिक विवाद ग्रिविनयम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिक्तयों का प्रयोग करते हुम हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिविस्चना सं० 5415-3-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए ग्रिविस्चना सं० 11495-जी-श्रम-57/112-45, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिविनयम की धारा 7 के ग्रिवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेत निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री रामनौमी की सेतायों का समागत न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 8 श्रक्तूबर, 1987

सं श्रो विव/रोह/111-87/39911.--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि मं (1) परिवहन श्रायुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) महा प्रबन्धक, हरियाणा राज्य परिवहन, रोहतक, के श्रीमक श्री महा सिंह द्राईवर, पुत्र श्री पुरन सिंह, गांव व ढा दुवलधन, जिला रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीसोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिये, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवाद अस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उसत प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या उनत विवाद से ससंगत अथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री महा सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राह्त का हकदार है ?

सं श्री ००वि/०रोह/108-87/39919.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० (1) मैनेजिना डायरेक्टर, दी हरियाणा स्टेट फेडरेशन कन्जूमर कोपरेटिव होलसेल स्टोर, एस.सी.श्री. 1014-15, सँक्टर 22-बी, चण्डीगढ़, (2) डिस्ट्रिक्ट मैनेजर, कन्फेड, ग्रीन रोड, रोहतक, के श्रीमक श्री श्रोम प्रकाश, पुत श्री रामस्वरूप, गांव बलब, तह० व जि० रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीखोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीचोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी श्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एव पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते है जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विश्वद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित है:—

क्या श्री श्रोम प्रकाश की सेवाओं का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है।

स॰ मो॰ वि॰/एफ॰ डी॰/128-87/39927.--व कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै॰ कृष्णा फैबीकेशन प्रा॰ लि॰, प्लाट नं॰ 315, सैक्टर 24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री विजय बहादुर सिंह, मार्फत भारतीय मजदूर संघ, विश्व कर्मा भवन, नीलम बाटा रोड, फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इसके बाद लिखित धामले के सम्बन्ध में कोई मोदोगिक विवाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई सिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7-क के श्रिधीन गठित श्रीद्योगिक श्रिष्ठिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है स्रथवा विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है, न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री विजय बहादुर सिंह की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर हाजिर हो कर लियन खोया है ? इस विन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप नह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि. एफ.डी./122-87/39934.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० गजेट एण्ड कन्ट्रोल डिवाईसिज, 4-ए/1, श्रृहुजा मार्किट, नेहरू ग्राउन्ड, एन.ग्राई.टी., फरीदाबाद, के श्रीमक श्री राम श्रयोध्या प्रसाद बादव, मार्फत ए.ग्राई.टी.यू. सी. (एटक), मार्किट नें० 1, एन.ग्राई.टी.यू. फरीदाबाद, तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले वे सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है :

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रौद्योगिक श्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है श्रथवा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री राम श्रयोध्या प्रसाद यादव की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ओ.वि./एफ०डी०/94-87/39941.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० सुप्रीम प्लास्टिक इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं० 73, सैक्टर 6, फरीदाबाद, के श्रमिक महा सचिव, फरीदाबाद इम्पलाईज यूनियन (रिज०) (एफिलियेटिस इंटक), 50, नीलम चौक, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यवाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित औद्योगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है अथवा विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट छः मास में देने हेतु निर्दिष्ट कर्रू हैं:--

क्या दिनांक 20 मार्च, 1987 से प्रबन्धकारिणी द्वारा संस्था को बन्द करने की कार्यवाही उचित है ? यदि नहीं, तो श्रमिक किस राहत के हकदार है ?

सं० ग्रो०वि० एफ०डी ०/गुड़गांव/238-87/39950.—-वृक्ति हरिया गा है राज्यवाल को राए है कि मै० हरबन्स डिस्ट्रीब्यूटर प्रा० वि०, गुड़गांव के श्रमिक श्रो जोगिन्द्र सिंह, पुत्र सरदार श्रतर सिंह माफी श्रो श्रद्धा नन्द, महा सिवेव, गुड़गांव फिक्ट्री वर्कर यूनियन (इंटक्र), गुड़गांव तथा प्रबन्ध हों को बीच इसमें इसहे बाद जिल्हा मानने हे संबन्ध में कोई ग्रीबोगिक विवाद है:

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसलिए, धव, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खंड (घ) द्वारा प्रदान की पर्ध शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7क के प्रधीन गठित श्रोद्योगिक भिक्षकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जी कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है ज्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री जोगिन्द्र सिंह की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर-हाजिर हो कर जियन खोसा है? इस बिन्दू पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहृत का हुकदार है?